झाडीपट्टी यात्रा के साथ रंगमंच

डॉ. संयुक्ता थोरात

महाराष्ट्र में रंगमंच की परंपरा काफी पुरानी है। कहा जाता हे की पहला नाटक सांगली में १८४५ में विष्णुदास भावे द्वारा "सीता स्वयंवर" नाटक खेला तभी से मराठी रंगभूमि की शुरुआत हुई। फिर यह परंपरा चलती रही।

महाराष्ट्र के विदर्भ, मराठवाडा और पश्चिमी महाराष्ट्र एसे तीन भाग हैं। पश्चिम महाराष्ट्र की रंगभूमि समृद्ध है ऐसे कहा जाता है । पहले के जमाने में नाटक सात अंकी होते थे और संगीत प्रधान भी । समय के साथ–साथ चीजें बदलती गयी । आर्थिक राजनैतिक और सामाजिक परिवर्तन के साथ कला के क्षेत्र में भी परिवर्तन हुए । सात अंकी नाटकों ने पहले तो तीन अंकों में अपने आप को ढाला और एकांक से काम चलाता है रंगमंच ।

कला के क्षेत्र में बदलाव के बावजूद एक रंगभूमि है जो आज भी अपनी परम्परा को जीवित रखे हुए है विदर्भ की झाडीपट्टी रंगभूमि जिसे हम सही मायने में यात्रा का रंगमंच कह सकते हैं । यात्रा के रंगमंच का जिक्र करते हैं तो बंगाल की जात्रा, दक्षिण का यक्षगान गुजरात की भवई, उत्तर प्रदेश की नौटंकी आदि नाम दिमाग के दरवाजे पर दस्तक देते हैं।

पर मुझे यात्रा के रंगमंच के बारे में झाडीपट्टी ज्यादा प्रभावित करता है । झाडी का मतलब है लम्बा घना जंगल और पट्टी का मतलब है बेल्ट यह घने लम्बे जंगल का एक पूरा बेल्ट है । झाडीपट्टी दृ गोंदिया, भंडारा, चंद्रपुर, गढचिरोली । यह वह भाग है जिसे झाडीपट्टी कहा जाता है । इन्ही जगहों पर दिवाली के दूसरे दिन से लेकर तो अक्षयतृतिया तक लगातार नाटक खेले जाते हैं । नागपुर की करीबन 33 से ज्यादा ऊपर बताये गये समय के दौरान झाडी में काम करती हैं ।

झाडी के इतिहास के बारे में एक कथा प्रचलित है, काफी पुराने जमाने में जब लड़की को देखने के लिए लडके वाले गाँव जाते थे तब उनका आदर सत्कार करते–करते सूरज ढल जाया करता था । सूरज के ढलने के बाद अपने गाँव में लौटना आसान नहीं होता था । घने जंगलों से जानवरों और नक्सलवादियों दोनों का डर बना रहता था । ऐसे में लड़की के गाँव में रुक जाने के अलावा कोई चारा नहीं होता था । घरवाले मेहमानों के मनोरंजन के लिये गाँव में नाच–गाने का इंतजाम किया करते थे । लड़के वाले हैं भई कहीं इस बात का खाका ना हो जाय, रात भर जगाया, हालत खराब कर दी, नहीं चाहिए इस गाँव की लड़की..... खैर

और तब से यह परम्परा शुरू हुई । झाडी में रात भर नाटक होते हैं । पहले लावणी, गोंधळ, खडी गम्मत इन लोक कला का प्रदर्शन हुआ करता था । कलाकार एक जगह से दूसरी जगह यात्रा करते थे, अपनी कला का प्रदर्शन करने के लिये । धीरे–धीरे झाड़ी में भी परिवर्तन आये झाडी की ओर सबसे ज्यादा नागपुर के कलाकार आकर्षित हुए । वत्सला पोलकमवार, मीना देशपांडे, विजया जगदळे यह वह नाम हैं जिन्होंने 80 से 90 में झाड़ी के दर्शकों को प्रभावित किया ।

ललित कला विभाग, रातुम नागपूर विश्वविद्यालय, नागपूर
Mob.: 9372163566 E-mail : sanyuktapihu@gmail.com

एक बार जब वत्सला जी से झाड़ी के विषय में बात हुई तो उन्होंने बताया कि वहाँ के दर्शक वीर पुरुषों की कहानियों को पसंद करते हैं । वह खुद झांसी की रानी का रोल किया करती थी जो लगभग 20 से 25 साल तक झाड़ी में चला..... झाड़ी के दर्शक नाटक में खासी रुचि रखते हैं, उन्हें नया कुछ दिखाया जाये और अगर उन्हें वह पसंद आ गया तो उस नाटक के काफी प्रयोग झाड़ी में होते हैं ।

झाड़ी का व्यवसाय बड़े पैमाने पर है । प्रेम, मंडली और गाँव का मुखिया ऐसे झाड़ी के प्रयोग की रचना की जाती है । झाड़ी में पूना, मुंबई के कलाकार भी काम करते हैं परंतु सबसे ज्यादा नागपुर के कलाकार होते हैं । शाम 6 बजे नागपुर से निकलकर कोई एक पिकअप प्वाइंट पर सारे कलाकार इकट्ठा होते हैं और फिर सूमो या 10–12 सीटर गाड़ी कर सभी कलाकार आधा घंटा या एक डेढ घंटे की घने जंगलों से लम्बी यात्रा कर उस गाँव में पहुंचते हैं, जहाँ नाटक खेलना है । गाँव में उस नाटक के कलाकारों का पोस्टर लगा हुआ होता है जो बिल्कुल फिल्मों के पोस्टर की तरह होता है । पहले कलाकारों को खाना खिला दिया जाता है फिर मेकअप करने को कहा जाता है । मेकअप रूम वगैरह कुछ नहीं होता है । ग्राम पंचायत के स्कूल के किसी क्लासरूम में बैठकर या पंडाल के पीछे छोटा रूम बना दिया जाता है, वहाँ बैठकर कलाकार अपना मेकअप किया करते हैं । कलाकार आपनी खुद की वेशभूषा केशभूषा और रंगभूषा किया करते हैं । झाड़ी में बहुत लाउड साउंड सिस्टम का इस्तेमाल किया जाता है और माइक कलाकार की हाइट के अनुसार एडजस्ट किया जाता है । अगर माइक पकड़ने वाले को नींद आ गयी तो समझ जाइये कि क्या होता होगा । नाटक के अंतराल में दर्शकों को मनोरंजनात्मक फिल्मी गाने पर नृत्य की प्रस्तुति चाहिये होती है । पुराने जमाने में यह फिलर लावणी से हुआ करता था परंतु धन्य हो रिलायंस और आयडिया जो गाँव–गाँव में पँहुचे और इंटनेट से सारी जानकारी गाँव–गाँव तक पहुँचाई जिससे कि आयटम सोंग्स ने भी वहाँ पहँचने में देरी नहीं की । जी हाँ आज्कल नाटक के अंतराल के दौरान फेमस आयटम सोंग्स की प्रस्तुति होती है । रात को 10 बजे नाटक शुरु होता है और सुबह के चार बजे खतम, दर्शक पूरी रात, पूरी तन्मयता के साथ नाटक देखते हैं ।

और फिर अपना बोरिया बिस्तरा बांधकर कलाकार अपनी सूमो में बैठ जाते हैं, घने जंगल की यात्रा करते हैं, घर लौट आते हैं, नींद पूरी करते हैं और पुनरू शाम किसी नये गाँव की तरफ रुख कर लेते हैं ।

यह यात्राएं बड़ी कठिन होती हैं, घना जंगल, गहरा अंधेरा, या अजगर का कभी भयानक प्रवेश हो जाता है । इन सबके बावजूद झाड़ी कलाकारों में झाडी का आकर्षण कम नहीं हुआ बल्कि यह यात्रा उन्हें रोचक लगती है ।

झाडी के नाटकों में तालीम का कॉन्सेप्ट नहीं है । प्रेस वाले कलाकार को फोन करते हैं कि आज शाम 6 बजे उस गाँव में शो है, उसे यात्रा के दौरान स्क्रिप्ट समझा दी जाती है, वह इम्प्रोवाइज करता है । एक छोटा सा किस्सा मुझे याद आ रहा है । हमारा प्रयोग था "कौमार्य" नाटक का, झाडी की स्त्री कलाकार वह नाटक देखने आयी, सम्भवतरू उसने झाडी के अलावा नाटक नहीं देखा था । वह लेडीज मेकअप रूम में हमारे साथ थी । जब कलाकार एक दो बार सम्वादों की तालीम कर रहे थे तब वह कौतुहल से उन्हें देख रही थी और कहने लगी कि "यह क्या है" तो हमने कहा रिहर्सल तो वह कहने लगी कि आप लोग रिहर्सल करते हो ? हमने कहा "हाँ दो महीना तो रिहर्सल करते ही हैं" वह आश्चर्यचकित हो गयी

और हम उसे कुतूहल से देखने लगे । खैर.....

एक ही नाटक सालों तक उसी कलाकार को लेकर किया जाता है । संभवतः बाद में कलाकार को सारी स्क्रिप्ट याद हो जाती होगी । पहले झाड़ी की तरफ देखने का नजरिया कलाकारों का अलग था । झाडी करने से एक्टर का विकास नहीं होता, झाडी का कोई स्टेंडर्ड नहीं वगैरा वगैरा । झाडी के कलाकार ५–६ महीने के बाद खाली होते हैं परंतु वे फिल्मों में काम करते नजर आते हैं । अनिरुद्ध बनकर ने झाडी को सम्मानित करने के अनेक प्रयास किए । उनका नाटक "घायल पाखारा" राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के भारंगम में प्रदर्शित हुआ उसी तरह सदानंद बोरकर की भी झाडी के प्रति आस्था ने अंतर्राष्ट्रीय थियेटर फेस्टिवल जो की दक्षिण में हुआ था वहाँ उनका नाटक "मीच पुसलं माझं कुंकु" का प्रयोग करने का मौका दिया । झाड़ी में काम करने का मुख्य आकर्षण है पैसा । झाड़ी में काम करने वाला कलाकार ६ महीने में ५ से लेकर १०,१२ लाख तक धनराशि कमा लेता है । आर्थिक स्टार पर झाडी काफी मजबूत है ।

झाडी के नाटकों के विषय के बारे में बात की जाय तो झाडी में मराठी संगीत नाटकों । पौराणिक और ऐतिहासिक विषयों पर नाटक हुए और सामाजिक विषयों पर भी नाटक होते हैं जैसी दारूबंदी, अंधश्रद्धा निर्मूलन, जातिवाद आदि ।

रही बात "परंपरा.....प्रतिमान एवं परिपेक्ष्य का आकलन" । तो में यह कहूँगी , झाडी ने अपनी परंपरा को बरकरार रखा है । झाडी कभी रुकी नहीं, थमी नहीं.....उसने अपनी परंपरा को कायम रखा वह बदलती गई परंतु चलती गई और आगे भी चलती रहेगी । झाडी के सारे कलाकारों को मेरा सलाम जो जोखिम उठाकर गाँव के उस कोने तक पहुँचकर वहाँ के लोगों का मनोरंजन कराते हैं जिनके लिए महानगरों में आने के लिए सोचना भी मुश्किल होता है ।

संदर्भ रू–

१. स्वानुभव ।

२. मुलाकातरू पूजा पिंपळकर, सचिन गिरी, सलीम शेख